केंद्रीय विद्यालय संगठन, जयपुर संभाग

सत्रांत परीक्षा सत्र 2025 -26

विषय – हिन्दी

अभ्यास प्रश्न पत्र - उत्तर-कुंजी

समय-2:30 घण्टे कक्षा - आठवीं पूर्णांक-60

1. 1x5

i.(क) साहसी मनुष्य का

ii. (ख) जीवन को अनंत मानकर आगे बढ़ने वाला मनुष

iii. (ग) संकटो को झेलना

iv. (द) यह सभी

v. (क) साहस ही जीवन है।

2. 1x5

i. (ख) दो देशों के बीच का बँटवारा

ii. (ख) परस्पर संबंधों में दरार आ जाती हैं तो भाईचारे का प्रश्न ही नही उठता।

iii. (घ) परस्पर ईर्ष्याभाव को

iv. (घ) मेल-मिलाप की गुंजाइश नहीं रह जाती।

v. (घ) बीता हुआ बचपन लौट आएगा।

3. 1x5

i. (ख) वृद्धा की

ii. (घ) कई जमाने से

iii. (क)पाँच बरस

iv. (ख) अपनी पूर्वस्थिति को

v. (क) मरने के समान

4. 1x5

i. (ग) सपनों की

ii. (क) आकाश में

iii. (घ) ऊपर और नीचे

iv. (ग) धुआँ

v. (क) आंखों

5. 2x3=6

i. वृद्धा की पोती ने ने खाना इसलिए छोड़ दिया था क्योंकि जमींदार ने उनकी झोंपड़ी पर कब्जा कर लिया था। उसे अपनी झोंपड़ी से बहुत लगाव था।

ii. जब हम अपने मित्र या संबंधी के घर जाते हैं, तो सबसे पहले उसे फोन करके सूचित कर देते हैं कि हम आ रहे हैं क्योंकि क्या पता उसे ही उसे दिन कोई काम हो। इस प्रकार उसे और हमें दोनों को सुविधा रहती है और वह भी आने वाले के लिए तैयार रहता है । फिर हमें अपने मित्र अथवा संबंधी के लिए फल, मिठाई इत्यादि उपहार स्वरूप लेकर जाते हैं।

iii. 'ऐसे ही मकान'-से नन्हेमल का आशय था कि शहर में डिब्बे जैसे बहुत ही बेकार मकान है।उनमें ना तो हवा आती है ना ही धूप। इन मकानों में रहना तो किसी जेल में रहने से कम नहीं, परंतु अब तो शहरों में प्रायः मध्यमवर्ग के पास ऐसे ही सुविधाहीन मकान है।

iv. नेताजी ने सुखी, समृद्ध, स्वतंत्र और आत्मनिर्भर भारत का सपना देखा था। ऐसा भारत जिसमें सामाजिक समानता हो, स्वदेशी उद्योग मजबूत हो और सभी दृष्टियों से मुक्त समाज राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे।

6. 2x2=4

i. कविता में सपनों की गति न बाँधने की बात इसलिए कही गई होगी क्योंकि यदि सपनों को स्वतंत्र उड़ाने नहीं दिया जाएगा तो वह हमारी आंखों में रह जाएंगे और समय के साथ खो जाएंगे, तथा एक बार यदि वो खो गए तो दोबारा आंखों में लौटकर नहीं आएंगे। इसी कारण हमें अपने सपनों को पूरी गति से इच्छाओं और प्रयासों को स्वतंत्र आसमान में उड़ने देना चाहिए ।

ii. कविता में ब्रह्मांडीय संरचना की बात स्पष्ट की गई है। मनुष्य एक बहुत विराट व विशाल श्रृंखला की एक

छोटी कड़ी है। हर ब्रह्मांड में असंख्य पृथ्वीयाँ , भूमियाँ और सृष्टियां मौजूद है।हमारे ग्रह और हम स्वयं, इस अनंत विस्तार में बस एक सूक्ष्म बिंदु है।

iii. 'दीवारें उठाना' केवल ईंट- पत्थर से जुड़ा काम नहीं है। कविता के अनुसार इसका प्रतीक अर्थ है मानव जैसे-जैसे उन्नति कर रहा है,वैसे-वैसे अपने संबंधों से दूर होता जा रहा है। संसार की विराटता के विपरीत मानव आत्मकेंद्रित हो जाता है। अपने दिल की भावनाओं को जीवन की आपा-धापी में खो देता है। कभी-कभी अपनी सोच इतनी सीमित कर लेता है कि वह एक छोटे- से कमरे में भी अपनों से ही दूर होकर दो दुनिया बना लेता है।

7. 2×3=6

ii. 1. टोकरी 2. वकील 3. इकलौता

ii. 1. भगत सिंह २. महात्मा गांधी 3. सुभाषचंद्र बोस

8. (10×1=10)

i. (क) सौरभ उड़ जाएगा नभ में।
(ख) अग्नि सदा धरती पर जलती थी ।

ii. (क) खंडों
(ख) समोसें

iii. (क) दीर्घ
(ख) प्राकृतिक

iv. (क) रौनक समाप्त हो जाना या निराश होना ।
(ख) मुश्किल कार्य करना। (वाक्य प्रयोग विद्यार्थी अपने विवेकानुसार कर सकता है।)

v. पुस्तक, विद्यालय, विद्यार्थियों, शिक्षक.

vi. (क) आँख - नयन, नैत्र, चक्षु, लोचन
(ख) मेहमान-अतिथि,आगंतुक,पाहुना,अभ्यागत

vii. माता-पिता = योजक चिह्न

viii. (क) स्वतंत्रता (ख) शीर्षक

ix. कमजोर = गुण वाचक विशेषण

9. प्रार्थना-पत्र (5)

सेवा में,
श्रीमान प्राचार्य महोदय,
केन्द्रीय विद्यालय, आगरा।
विषय: विद्यालय में खेलों के उचित प्रबंध कराने हेतु प्रार्थना-पत्र।
महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय के कक्षा आठवीं का छात्र/छात्रा हूँ। हमारे विद्यालय में खेलों की उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण विद्यार्थियों को खेलने में कठिनाई हो रही है। खेल सामग्री जैसे फुटबॉल, क्रिकेट बैट-बॉल, वॉलीबॉल, बैडमिंटन आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं हैं। इसके अलावा खेल मैदान की साफ-सफाई तथा खेलों के लिए नियमित समय-सारणी भी नहीं बन पाती है।

महोदय, खेल विद्यार्थियों के शारीरिक विकास, स्वास्थ्य तथा मानसिक ताजगी के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। यदि विद्यालय में खेलों का उचित प्रबंध हो जाए तो विद्यार्थी अधिक उत्साह से खेलों में भाग लेंगे और विद्यालय का नाम भी प्रतियोगिताओं में रोशन करेंगे।

अतः आपसे निवेदन है कि विद्यालय में खेल सामग्री की व्यवस्था कारवाई जाए, खेल मैदान को ठीक कराया जाए तथा खेलों के लिए नियमित कांलाश निर्धारित किए जाएँ। इसके लिए हम सभी विद्यार्थी आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।

धन्यवाद।
भवदीय,
आपका आज्ञाकारी छात्र/छात्रा
नाम: _____
कक्षा: _____
दिनांक: _____
अथवा

बधाई-पत्र

पता- अ-585

प्रेम नगर,

जयपुर |

प्रिय छोटी बहन _____

सुभाशीष

मैं यहाँ प्रसन्न हूँ तथा आशा करता हूँ कि सभी वहाँ सकुशल होंगे | यह जानकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई कि तुमने हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में क्षेत्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया है। तुम्हारी इस शानदार सफलता ने हमारे परिवार का नाम रोशन किया है। मैं तुम्हारी मेहनत, लगन और आत्मविश्वास की दिल से सराहना करता/करती हूँ।

हिन्दी में नियमित अध्ययन, अनुशासन और निरंतर प्रयास के कारण ही तुम्हें या सफलता प्राप्त हुई है। तुमने यह साबित कर दिया है कि यदि लक्ष्य स्पष्ट हो और मेहनत सच्ची हो तो कोई भी मंज़िल दूर नहीं रहती। मुझे तुम पर बहुत गर्व है। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि तुम आगे भी हिन्दी विषय के क्षेत्र में इसी तरह सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करती रहो और अपने सपनों को पूरा करो। अपनी मेहनत और सकारात्मक सोच बनाए रखना।

एक बार फिर ढेर सारी शुभकामनाएँ और बधाई! बड़ों को प्रणाम, छोटो को प्यार |

स्नेह सहित,

तुम्हारा/तुम्हारी

.. ।।

10. अनुच्छेद लेखन 5 अंक

- भाषा शुद्धता 1
- विषय वस्तु 2
- क्रमबद्धता 1
- प्रस्तुति 1

(छात्र स्व- विवेकानुसार उत्तर देंगे।) 5

11. संवाद लेखन - 5 अंक

- भाषा शुद्धता 1
- विषय वस्तु 2
- प्रस्तुति 1

(छात्र स्व- विवेकानुसार उत्तर देंगे।) 4